उदारवादी युग

(The Moderate Era, Liberal era)

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास कॉंग्रेस का इतिहास है। स्वतंत्रता संग्राम में कॉंग्रेस ने ही अग्रणी संस्था के रूप में कार्य किया। अतः राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास वस्तुतः कॉंग्रेस के जन्म अर्थात् 1885 से प्रारंभ होता है जिसे तीन-चरणों में विभाजित किया जा सकता है :-

(i) प्रथम-चरण - 1885 से 1905 ई० तक - उदारवादी युग - (Liberal Era)
(ii) द्वितीय-चरण - 1906 से 1918 ई० तक - उग्रवादी युग - (Extremist era)
(iii) तृतीय-चरण - 1919 से 1947 ई० तक - गाँधी युग - (Gandhian era)

राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रथम-चरण कॉंग्रेस का शैशवकाल (बाल्यावस्था) कहा जाता है। 1885 से 1905 ई० की अवधि में कॉंग्रेस का एक संस्था के रूप में क्रमिक विकास हुआ तथा उसकी नीतियों एवं कार्यक्रमों का विकास हुआ। इस अवधि में कॉंग्रेस ने सुधारवादी कार्यक्रमों को अपनाया। उसने जनता की माँगों को सरकार तक पहुँचाया तथा अनेक सामाजिक, सांविधानिक और अन्य सुधार संबंधी प्रस्ताव पास किया। इस युग को सुधार का युग (Era of Reforms) कहा जाता है।

कॉंग्रेस के जन्म दाता और प्रारंभिक नेता उदारवादी विचारधारा के समर्थक थे। इसलिए कॉंग्रेस का प्रारंभिक काल (1885 से 1905) उदारवादी, नरमवादी (Moderates) काल कहलाता है। इस काल में भारत के उदारपंथी नेता देश के राजनीतिक क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका में थे। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करते थे। ब्रिटिश सरकार भी उन्हें भारत के प्रभावशाली नेता मानती थी। कॉंग्रेस के उदारवादी नेता गोपाल कृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, फीरोजशाह मेहता, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, पं० मदन मोहन मालवीय, महादेव गोविन्द रानाडे इत्यादि ब्रिटिश सरकार के प्रति अपार स्नेह और भक्ति रखते थे। उनकी ब्रिटिश लोकतांत्रिक परम्पराओं में आस्था थी। वे सोचते थे कि बड़े अच्छे मौके से भारत में अंग्रेजी राज स्थापित हुआ है। अंग्रेजी शासन देश को स्वतंत्रता, प्रगतिशील, जनतांत्रिक, राष्ट्रीय अस्तित्व प्रदान करेगा। उन्हें आशा थी कि इंग्लैण्ड से वह महान आदेश आएगा जिससे भारतीय जनता को मताधिकार प्राप्त होगा। इस काल में कॉंग्रेस ने सुधारवादी कार्यक्रमों को अपनाया। उसने जनता की माँगों को सरकार तक पहुँचाया तथा अनेक सामाजिक, संवैधानिक और अन्य सुधार सम्बन्धी प्रस्ताव पास किए। इस युग को सुधार युग की संज्ञा प्रदान की गयी है।

उदारवाद का अर्थ :- (Meaning of Liberalism) :- उदारवाद एक आन्दोलन तथा जीवन की एक धारणा है। यह रूढ़िवाद का विरोधी एवं प्रगति का द्योतक है। इसकी परिभाषा करना कठिन कार्य है।

Liberalism शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द "लिबरलिस" से हुई है

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

जिसका अर्थ 'स्वतंत्र व्यक्ति से संबंधित'। इसमें व्यक्ति के लिए एक ऐसे राजनीतिक और सामाजिक वातावरण के निर्माण पर बल दिया जाता है जिसमें उसकी स्वतंत्रता और नैतिक गरिमा सुरक्षित रहे। उदारवाद एक सिद्धान्त है, जिसका सम्बन्ध व्यक्तिवादी विचारधारा के आधुनिक है। उदारवाद का केन्द्र बिन्दु व्यक्ति है तथा वह वैयक्तिक स्वतंत्रता का हामी और बंधन व नियंत्रण का विरोधी है। उदारवाद एक ऐसा दृष्टिकोण है जो व्यक्ति पर कम से कम नियंत्रण का पक्षपाती है। उदारवाद क्रमिक और सीढ़ी दर सीढ़ी वैध परिवर्तन और प्रगति का दर्शन है। उदारवाद व्यक्ति की गरिमा का पक्षपोषक है तथा व्यक्ति के शोषण का विरोधी है। यह व्यक्ति के विकास का समर्थक एवं राज्य के आवश्यक हस्तक्षेप को स्वीकार करता है। अतः उदारवाद अनुचित बंधनों का विरोधी है

उदारवाद का विकास (Evolution of Liberalism) :— कांग्रेस का उद्देश्य देश में छोटे-छोटे संवैधानिक तथा प्रशासकीय सुधार लाना था, जैसे विधायिका परिषदों में भारतीयों के प्रतिनिधियों में वृद्धि तथा न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करना। कांग्रेस के उदारवादी नेताओं में सादगी, विलक्षण प्रतिभा तथा देश के प्रति माया-मोह कूट कूट कर भरा हुआ था। उन लोगों का कहना था कि क्रांति से बना हुआ काम भी बिगड़ जाता है। इसी सोच को अपनाते हुए अपनी सादगी एवं कुशल व्यवहार ने अंग्रेजों को नतमस्तक कर दिया और विकास की गति तेजी से बढ़ता गया। उदारवादियों की नीति 'भिक्षा देहि' की नीति थी। उसने अपने वार्षिक अधिवेशनों में ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति वफादारी व्यक्त की तथा वैधानिक तरीकों पर जोर दिया। कांग्रेस द्वारा सुधारवादी नीति को अपनाने का मुख्य कारण इस पर उदारवादियों का आधिपत्य था। जिसके कारण कांग्रेस के इस युग को विशुद्ध वैधानिक, उदारवाद या राजनीतिक साधुतावाद का युग कहा जाता है। जिसे अपनाकर उदारवादियों ने सीढ़ी दर सीढ़ी विकास के चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया।

प्रारम्भिक कांग्रेस का स्वरूप (Nature of Early Congress) :— कांग्रेस के प्रारंभिक युग जिसे उदारवाद या नरम दल (Moderate) का काल कहा जाता है कि अपनी कुछ निजी **विशेषताएँ** इस प्रकार है :—

(1) यह एक राष्ट्रीय संगठन था (It was a National organization) :— भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस किसी एक जाति, धर्म या वर्ग संगठन नहीं था। इस संगठन में सभी जातियों, धर्मों तथा वर्गों के व्यक्ति सम्मिलित हुए थे। कांग्रेस के संस्थापक ए. ओ. ह्यूम अंग्रेज (ईसाई) प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी भारतीय ईसाई, दूसरे अध्यक्ष दादा भाई नौरोजी पारसी, तीसरे अध्यक्ष बदरुद्दीन तैयबजी मुसलमान, चौथे अध्यक्ष जार्ज यूल और पाँचवे अध्यक्ष सर विलियम वेडरबर्न अंग्रेज थे। इस प्रकार कांग्रेस का स्वरूप प्रारंभ से ही राष्ट्रीय था। गाँधीजी के अनुसार "यह बताना बड़ी प्रसन्नता की बात है कि इसकी शुरुआत एक अंग्रेज के मस्तिष्क से हुई। ए. ओ. ह्यूम को कांग्रेस के पिता के रूप में हम जानते हैं। दो महान पारसियों ने फिरोजशाह मेहता तथा दादाभाई नौरोजी ने जिन्हें सारा भारत 'वृद्ध पितामह' कहने में हर्ष अनुभव करता है, इसका पोषण किया।

(II) आरम्भ में जन साधारण का संगठन नहीं था (In the beginning not a mass organisation) :- प्रारंभ में जनता का संगठन नहीं था। इसके प्रारंभिक सदस्यों में श्रेष्ठ, बुद्धिमान, शिक्षित व्यक्ति थे जो ऊँचे तथा उच्च मध्यम वर्गों से सम्बन्धित बड़े-बड़े व्यापारी थे। अधिकांश सदस्य वकील, शिक्षक तथा पत्रकार थे, थोड़ी संख्या में डॉक्टर भी थे। जिसके कारण कॉंग्रेस आम जनता की आवाज बुलन्द नहीं कर रही थी, परन्तु कॉंग्रेस के उन नेताओं में इस कमी को दूर करने की ललक थी।

(III) यह उदारवादी संस्था थी (It was Liberal Society) :- कॉंग्रेस का प्रारम्भिक स्वरूप उदारवादी था। इसके नेताओं का विश्वास क्रांतिकारी, हिंसक, प्रतिक्रियावादी, संघर्षकारी कार्यों और नीति में न होकर शांतिप्रिय और वैधानिक साधनों में था।

(IV) निरंतर बढ़ती हुई शक्ति (Continuous increasing power) :- कांग्रेस की शक्ति और सदस्यता निरंतर बढ़ती रही। इसके प्रथम अधिवेशन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उस समय यह विश्वास नहीं किया जा सकता था कि यह संस्था एक दिन राष्ट्रीय संस्था का रूप धारण करेगी और ब्रिटिश सरकार से भारत को मुक्ति दिला सकेगी, लेकिन कांग्रेस की शक्ति में निरंतर वृद्धि होती गई। दूसरे अधिवेशन में 436, तीसरे में 607 और चतुर्थ अधिवेशन में 1248 प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा धीरे-धीरे इसने अखिल भारतीय स्वरूप धारण कर लिया।

(V) कांग्रेस के प्रति ब्रिटिश सरकार का परिवर्तन शील दृष्टिकोण (Flexible Attitude of the British Government towards the congress :- अखिल भारतीय कांग्रेस का जन्म 1885 ई० में तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड डफरिन के सुझाव पर हुआ था। कांग्रेस का प्रारंभ ब्रिटिश सरकार के वरदहस्त की छाया में हुआ था। इसलिए कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में शामिल होनेवाले प्रतिनिधियों का स्वागत स्वयं गवर्नर जनरल ने किया था। तीसरे अधिवेशन के अवसर पर मद्रास के गवर्नर ने राजभवन में प्रतिनिधियों का सम्मान किया।

प्रारम्भिक कांग्रेस के उद्देश्य तथा कार्य (Aims and work of the early Congress) :- प्रारंभिक कांग्रेस का काल 1885 से 1905 तक बीस वर्ष का रहा है। इस काल में कांग्रेस का उद्देश्य सरकार से सुधारों की माँग करना रहा था। कॉंग्रेस के प्रथम अधिवेशन के समय इसके अध्यक्ष W.C. Banerjee ने कांग्रेस के चार उद्देश्य गिनाये थे जो इस प्रकार है :-

(I) भारत के विभिन्न भागों के देशभक्त कार्यकर्ताओं की परस्पर जान-पहचान तथा मित्रता बढ़ाना।

(II) सभी देश भक्तों में जाति, धर्म तथा प्रान्तीय भेदभावों को दूर करना और राष्ट्रीय एकता की भावना को पूर्ण विकसित तथा सुदृढ़ करना।

(III) तात्कालिक महत्वपूर्ण समस्याओं के बारे में भारत के शिक्षित वर्ग के सुधरे हुए विचारों का प्रामाणिक रिकार्ड तैयार करना।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(iv) इन कार्यकर्ताओं के लिए अगले 12 महीनों के लिए कार्यक्रम निश्चित करना।

उदारवादियों के कार्यों का मूल्यांकन :- उदारवादियों के कार्यों की सराहना और आलोचनाएँ दोनों हुई है। उदार राष्ट्रवादियों के कार्यों का मूल्यांकन इस प्रकार किया जा सकता है।

उदार राष्ट्रवादियों के दोष (Defect in the Liberal Nationalism) :- इनके दोष इस प्रकार है —

(i) **ब्रिटिश सरकार के प्रति त्रुटिपूर्ण धारणा (Defective Policy towards British Government)** :- उदारवादी ब्रिटिश शासन को दैवी वरदान समझता था। उनका यह समझना ठीक नहीं था कि इंग्लैण्ड एवं भारत के हित समान हैं। वे अंग्रेजों की इस नीति को नहीं समझ सके कि वे अपने पूँजीपति हितों की पूर्ति के लिए भारत का शोषण कर रहे हैं तथा स्वशासन देने के पक्ष में नहीं हैं। अंग्रेज 20 वर्ष शासन किया और उदारवादियों की साधारण सी माँगें भी स्वीकार नहीं किया।

(ii) **कांग्रेस की नीति राजनीतिक भिक्षावृत्ति (Policy of Congress Political Mendicancy)** :- उदारवादियों की नीति और कार्यप्रणाली को राजनीतिक भिक्षावृत्ति की संज्ञा दी गई। उन्होंने जो नीति बनाई उस पर एक आरोप यह भी लगाया गया कि ह्यूम ने व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए भारतीयों से एक संकल्पात्मक संघर्ष का आह्वान किया था, जबकि उन्होंने इसके विपरीत संघर्ष ही नहीं बल्कि प्रार्थनाओं और अपीलों की नीति को अपनाया। गुरुमुख निहाल सिंह के शब्दों में - तिलक और सम्भवतः गोखले को छोड़कर कांग्रेस के उदार नेताओं में कोई भी स्वतंत्रता के लिए व्यक्तिगत बलिदान करने तथा मुसीबतें सहने के लिए तैयार नहीं था।

उदारवादियों की सफलताएँ :- (Achievement the Moderates) :-
उदारवादियों की कमियों से यह अभिप्राय नहीं लेना चाहिए कि उदारवादियों के कार्य महत्वहीन थे अथवा उन्होंने किसी भी प्रकार से भारतीय राजनीति को प्रभावित नहीं किया बल्कि भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन में वही कार्य किया जो भवन निर्माण में नींव का पत्थर करता है। उदारवादियों की सफलता इस प्रकार देखी जा सकती हैं :- (i) भारतीयों को राजनीतिक शिक्षा देकर प्रजातांत्रिक आदर्शों को समझने की प्रवृत्ति पैदा की (ii) कांग्रेस के उदारवादी नेता ने साम्प्रदायिकता तथा क्षेत्रियता जैसी संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठकर भारतीय राष्ट्रीयता का नारा लगाया (iii) संसदीय शासन प्रणाली के अभाव में प्रारम्भिक कांग्रेस ने जनता एवं सरकार के बीच कड़ी का काम किया (iv) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का आधार स्तंभ का श्रेय उदारवादी युग के नेताओं को है। उन्होंने ही भारतीयों को अपने अधिकारों के लिए सरकार से लड़ना सिखाया। (v) भारतीय परिषद अधिनियम 1892 की अधिनियम पारित कर मुम्बई, चेन्नई और बंगाल के प्रांतों के गवर्नर की परिषदों की संख्या बढ़ाई गई, अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली अपनाया गया, परिषदों के कार्य क्षेत्र में वृद्धि की गई। इस प्रकार उदार राष्ट्रीय आन्दोलन अपनी कमियों के होते हुए भी भारत में राष्ट्रीय जागृति की दिशा में प्रारम्भिक और महत्वपूर्ण पग सिद्ध हुआ।

डॉ॰ राजू मौर्य
विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान
डी॰ के॰ कालेज, डुमरांव
दिनांक — 29/07/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA